

१२० नाम दसन १०

२२० दस नवः सागन सागल्य ककमदा रवगिरुत सर्वकाजः धननातार विषय
मि ॥ १० ॥ युवा सिवा नाय दृग्गदय दृग्गः पुवा सिमन न को य माहा दृग्गः न
द्यन अगिरुत मन्थाः को वा य दोष दृग्गः पूजा गन्था नि य मा न तव नी को सा ॥ १०
सा गिवा नाय दृग्गः को य कः आय दार लो दृग्गः मन्थन क वि माहाः न सो य व ना हा अ नि
रु इ मन्था को दृग्गः ॥ तस्मात् को दृग्गः न व नि को हा ला ॥ १०

१॥ विदमः सः वा दः कः
१॥ श्री याम वा दः कः
लक्ष्मि नथी
मवावूयू ॥ ॥

१॥ वंशमूया कायदयी
॥ कः रुधर्मया दानमा
रुकरुया दं ॥

१॥ विदमः सः वा दः कः
ननानं आयी ॥ विद
॥ ॥ सगवा दः
॥ सुखनन
नानं आयू ॥ ॥

१॥ वंशमूयानि श्रयनं दः
च वूयू ॥ कदाचित्तनयं

१॥ वंशमूया मयूना
॥ ४ ॥

१॥ वंशमूया मयूना

सकः रुया ॥ वूयू ॥ ॥

सुय ॥

१॥ नूगवमः कः रु नः कः रु
॥ ॥ श्री याम वा दः कः
॥ ॥ श्री याम वा दः कः
॥ ॥ श्री याम वा दः कः

१॥ वंशमूया मयूना
॥ ॥ कः रुधर्मया दानमा
॥ ॥ रुकरुया दं ॥

१॥ वंशमूया मयूना
॥ ॥ कः रुधर्मया दानमा
॥ ॥ रुकरुया दं ॥

रस्यं

रविदामसवाठक
लिहामउअ
नीरूता
॥

१८४ स्थितिवाल् ॥ ५ ॥
१९० मन्मथसूत्रस्थितामचा

१२ वा ऊ म डू द्रः त अ डू ख सि
या अ यी ना नि हा अ य म डू
त व।

दयूलासय ॥

**१२ धर्मग्रन्थी या काय
वृत्तिः ।**

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१ तजाली म्या यथक्
कदाचित्सां तजक
स्मन म्यायी ॥

१ विदग्धस्य सादृश्यं धनञ्जयः
२ यतः श्रीमत्सूनीः श्रुतं धी
३ दग्धस्य धनञ्जयः धनञ्जयः
४ सादृश्यं धनञ्जयः धनञ्जयः
५ नमः धनञ्जयः धनञ्जयः
६ धनञ्जयः धनञ्जयः धनञ्जयः

१ मयामदयामयाम
१ वैष्णव दयुता ॥
मुनीया का
यमया अयवस्य
नंदयुता ॥

१ बालक रवा अया कृप
या लया मो खन रवा न
॥

१ सा द्या या कृति
लं रुन अ
यीता ॥ १ रवा क
मद कृति
लं रुन अयीता
॥

१ विद गम अमुनीया कृमद
नथी द्या य कयीता ॥

१ उकु बाल ॥ ७ ॥
१ बालक रवा अया कृदा रव

१ विद गम साठ कृ गनं म
अनी थन अयीता ॥

न रवा लस्य ॥

१ थ अमुनीया किमस्त
कृन मल्लमचा
वूयीता ॥

१ थ अ
मुनीया
कृमद
युता ॥

१ नूगल मकिठन ००० रु
यारिठ रवठन कयीता
॥

१ युलद मसाठ कृ अर्न
१ त अ साठा चीन रु ति
नागी म्ना ॥
यीता मरव
॥

१ मचाखाअयालंख
१ मचाम यादाखनखा
दूकयूलख ले ॥
या कायदयीअ ॥

१ बालखवानग्रहयादा
खन लागीरुलो म्मायी
अमखूकदाचीतऊतन
म्मायूअ ॥

१ खाऊ मडूक मडू १ वि
ना धंश्च काय दगाम
मूमात्र ॥ या ठूक म
उआनी (थक
नासवान ॥

१ वंश्चा मुीया कायदयूअम
ख ॥

१ मणि बाल ॥ १ ॥

१ युसदगअकैदे गनंमअ
नी धनलिराआवा ॥

१ बालक बागीरुआकू म्मा

यीअ तारियू तारय ॥

१ विदसमचोदकू मुी
या विनंरुनमचा १ थ
वूयूअ ॥ कू मुी
थी मचा वूयू
अ ॥

१ थकू मुीया कायवूयूअ
भंसय ममाल ॥

१ तआ तारीयातअम
ने वयाय मूमात्रा म्मा
गत्रम यूअमखू ॥
चिठनठी
अयुयादाख
तसियूअ ॥

१वाल १वाल कम्बायी अर्से
करवाल १दहमूमात्र ॥
सलिनसत्रोग
दयाउरवाल ॥

१विवाहलसीधुनंरु
यीउ ॥

१खारुमरु विदग १यु
उरुमननो १दसउ
तायीन १दकेननं
उना १योनो मरुउ
॥ १निउमखू ॥

१मचामरुयूलखयाक्राव
दयीउ ॥

१नादूया ॥ ४ ॥

१विवाहयाय रालया

१तउनागीम्बायीअरु
तावावायममाल ॥

१कउविवाहलरुयी
नास्त्रय ॥

१वक्ष्मयीयाअनगरु
लिनयादानका १वि
यदयीउ १दगम
॥ १ओरुमयीया
सिधुनंमरा
वूयउ ॥

१धक्ष्मयीया सिधुनं
कायदयीउ ॥

१नगरमकिठयाहि
१धक्ष्म १रुखदनदयीउ
याअवस ॥
नकायवूयउ
गोगीरुकायूउ ॥

१ विवाहालसिधुने
 १ वान कमाहसं रुयी ३ ॥
 ३ यनम्यायी
 ३ ॥

१ थ क्कुमी ३ विवाहात्र
 यादान अतिसुखता
 यदयी ३ मख ॥

१ यलदगरी ३ क्कु १ त
 जूनर्तमत्र ३ ३ त्रा
 नी ॥ गीयात्रा
 यत्रास्य ३ त्रा
 सिय ३ ॥

१ वालक रवीला यार्थया
 क नायन रवीत्र ॥

१ कुरुया ॥ २ ॥
 १ लात्रया ३ ३ विवा

१ नूगत्रम विदुते मरिठ
 ठनेमात्रि ३ ॥

हात्रयादान गुरुत्रयि
 नास्वय ॥

१ मचामइयत्र स्वया
 अनेगरुत्तया ३ ३
 नकायद ३ ३
 य ३ ॥ ३ ॥
 ३ ३ ३ ३ ३ ३
 ३ ३ ३ ३ ३ ३
 ३ ॥

१ विदगस ३ ३ क्कु
 म्मीया ३ ३ म्मा
 वूयी ३ ॥

१ थ क्कुमीया ३ ३
 १ थ वूयी ३ ३ ३ ३
 क्कुया ३ ३ यिनि
 वित्ररुतम ३ ३
 वादय ३ ३ ३ ३

१वि १ध द्रुमीयावेवा
वाहा हा लयादान
लक्ष्मी ॥ माहासुख
विष्णु ॥ ॥ ॥

१वमुयेदाथसमादाश्री
नन्दरुयु ॥

१तडावागीयावा १नू
यनायु ॥ गनम
मख ॥ छिदनक
॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥

१वालक ॥ ॥ ॥
यी ॥ ॥ ॥

१श्रुयती ॥ १० ॥
१वमुयेदानंशु दादा

१ध द्रुमीयाकायवृयी
॥ ॥ ॥

न ॥ ॥ ॥

१वालक ॥ ॥ ॥
या ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥

१वंधा ॥ ॥ ॥
या ॥ ॥ ॥

१ध द्रुमीयाननानंमवा
१वि वृयी ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥

१ मुमिताहातिस्का
१ कुंदका यानस्वाथदयम
नमश्चाम स्व विवाहाद
रुलक्षयुञ्ज ॥ य ॥

१ लालयाद गसकसु याका
न किलक्षयुञ्ज ॥

१ धम्मकीया मुखन
मवावयुञ्ज ॥ १ वि
द गसुञ्ज
द मुयीयावि
लंरुन कसुया
कानमवावयुञ्ज ॥

१ वमुआनर या कानमाहा
सुखदनेयी अताकालं ॥

१ आदिनी ॥ १३ ॥

१ लालयाद गसथीलनचा

१ वधम्मकीया गवर्तलसंमवा
दयी अमख ॥

नदय नखय ॥

१ धम्मकीया विवाहाया
कान मुयीयलख १ वि
सियी अ ॥ वाहाया
य लालया अ
य अ विवाहा
सिंघुनं इयुञ्ज ॥

१ बालक म्वायु अमख न
नानं सियी अ ॥

१ मवा मइय नखया न
१ वा किकायदयुञ्ज ॥
लकरवा
लहुतया
दाखन खाल ॥

२०६ ठनामदस लं॥ २३ ॥

कंदुदसने शिव॥ कार्यनास्य रविष्यति॥ मतंचक संगाय॥ धननास्य रविष्यति॥ २२
 पवाहिवागा पूरुनरुपि उक्त॥ पवाहि जाग यन निग गत्॥ वक्ष मापा वा ॥ २३
 सिमजंग कश्चि रयि रग लेषलः ॥ २४ ॥ कति कहु ॥ २२

गणितवागापूष्टतहपिजकआपूसा।निकोअथिन॥अथिनमाहातृत्युआपूसातह
इरहेंद॥वनकोवाकिनिकोदोषदृ॥कालोबाधनानिपूजाग्रहकोकाष

दासगता तव निकोहोना ॥ २२ ॥ नृगवागापू दृगहे पिठेक ॥ गं जासुठको वनद्व
 यकवायो वनद्व ॥ विजाना वन जिउं प्रपापवि ताई दृम ॥ अरुनासहा निर्म
 उहोना ॥ यो काम दृम उहा दृम ॥ तव निकोहोना ॥ २३

२४ हं वा गा पू ष्ठ ग हं धि उं कः श्रुता द्युं नः वदा क स रु द्य ॥ रु मि द्यु ० उष व इ ही
सा ॥ व च न मं जो न य हो रा र २ ॥

२ श्री हस्ति नाम दसमं ॥ २४ ॥

श्री हस्ति नाम दसमं किर्या ॥ कामना खर विषयि मयरा श्री विगल खरा गाय
यदसमम ॥ प्रवाहि वागा पूरु दग हे वि ऊक ॥ प्रवाहि जिया बन यम कस सग
हि जो दो यन आ उरा ॥ काषा कहि छुं न ॥ रन सा निह ॥ का चाषा सा हो को द
वाषा गरा सि दिया ह मयीन को हो जा ॥ २४
२ गवागा पूरु दग हे पि ऊक ॥ गवा ईर सो हो जा ॥ गता सु दु को क्षर हो जा ॥

मकन दस यरा द हो जा ॥ बाजा पूजा दस हो जा ॥ गरो सु उत कन को रू द गता
वस वदा वेदा वेदो से द ॥ गह उबरया ह ॥ गव गता जि ग हो जा ॥ निचय ग विमा
न्या ॥ २४ ॥

२ गह वागा पूरु दग हे पि ऊक ॥ गह वाजा यो ॥ गह वरु गसर द ॥ वन स मिर सो हो जा ॥
गह को दाप छुं न ॥ गह ग लिमा न्या ॥ २४ ॥

२७ ब्रह्मा न दसनं ॥ २५

ब्रह्मा न दसनं कथा ॥ सर्वकार्यमा सर्वः एव कार्त्तुं सिद्धिं धनं शान्तिं विष्णुनि-
श्रवाणि वागाप्युक्तं ह्युक्तं ॥ प्रवाहिकसरोधमः नारसहिगति आकाशं नो अयूष-
कं ॥ २५ ॥ रोगिवागाप्युक्तं ह्युक्तं ॥ अप्रयत्नो यत् ॥ अनंदस्य च ॥ न ज्ञाताः
ॐ को दोषश्च ॥ तस्मात् पूजा गत्या ॥ २५ ॥

ब्रह्मा न दसनं कथा ॥ नो ज्ञाता यो यत् ॥ नो ज्ञाता यो यत् ॥ अचिन्ता ईवत्
गता ॥ पिच्छि नो कार्त्तुं सिद्धिं हो जा ॥ २५

२७ ब्रह्मा न दसनं कथा ॥ नो ज्ञाता यो यत् ॥ नो ज्ञाता यो यत् ॥ अचिन्ता ईवत्
गता ॥ पिच्छि नो कार्त्तुं सिद्धिं हो जा ॥ २५

१ श्रीदेवनामदस्तनं ॥ २५ ॥

श्रीदेवनामदस्तनं ॥ नरु मियायपूनाकनं ॥ यउ कामकायसिद्धि वचना राखि व
छाति ॥ २५ ॥ युवाहिवागाय दहय उक ॥ प्रवाहिबकनकस्तन ॥ सारसहिगद्यवभा
उजा ॥ रुमयजनिमात्य ॥ २५ ॥

रमो गिवागाय दहयिउक ॥ गसायत कल देवनाका दाव ॥ गखपूजागन्यागव निक्का
लोना ॥ २५ ॥ २५ ॥ गवागाय दहयिउक ॥ गजा साहिजासुकाय उकामनाकि

२५ ॥ वलगता सुउआरया द ॥ पाजिगेजासुउआ रुसागता ॥ गजिगतास ॥

वनराजिआउजा ॥ २५ ॥

एकावागाय दहयिउक ॥ गजाचिगायागदहर ॥ गजासागद्यगियाद ॥
सेयव दउनधीज ॥ जन दमास ॥ गवरनीलोना ॥ २५ ॥

२ स नि चर नाम दसनं ॥ २७

सन्निचल दस न कृत्या ॥ कार्य ना स्य र विष्य ति ॥ स्वयं माय सत्य जनम् ॥ क्षत ना स्य
सत्य ति ॥ २७

यथासिवागापूदनदपिऊकः यथासिकममनं कथिनदोना॥ २२

२॥ गीवाता पूछ नह पिऊँ का। अपू दनि का अथिन संकय छवन को रग दा किनी को
साय छ ॥ न को पूजा गन्या ॥ गुरु को पूजा गन्या ॥ ३१

२ अगवा नापू द न ह पि अं क ॥ न व स दे ग नि नि न ग न द ॥ स वि ज्ञाना व रु उ य याः
स गं जा गं जा व हि ना ॥ धन जि या व ति हा ना ॥ ब्रु हि वि चा रि ता ॥ ३७ ॥

॥ शक्ता वाग्नाप दग दपि ऊँ क॥ नञा चागा गहसरा द्युं न॥ श्वकले सवग हं ना॥
वनजियाषणि होना॥ न चनमाहग को वास द्यु॥ न चनफादि होना गवरा नाही
ना २० ॥

श्रीसूक्तनामदसप्तः ॥ २८ ॥

श्रीसूक्तनामदसप्तः कृत्या ॥ सर्वकामभूय सिद्धिया ॥ गेसकसिद्धि तिकामजायगे
नाग्रसं सय ॥ २८ ॥

स्ववासिवागापूद्यत हपिऊक ॥ प्रवा सितारसहिता ॥ गविरुजिके आरिपूर्ण सिच
य ॥ २८ ॥ ॥ जोगिवागापूद्यत हपिऊक ॥ आपूदारनी द्य ॥ गेवा पव

माऊनव गिहा को वापूको दीपद्य ॥ तर्को पूजा गन्या ॥ दीपोदा कि निकादी
षद्य ॥ नासुयाईव गन्या ॥ गवनिका होना २८ ॥

स्वगवागापूद्यत हपिऊक ॥ गयादिनको नूगदा विलाई द्य ॥ गेवा सुसारला
गिपविनह द्य ॥ वक्षिवधरया म ॥

गिमावागापूद्यत हपिऊक ॥ गेवा गिरुको आसपास द्य ॥ यकरुसया नूक
जलकानजिके यक द वगाको धन द्य ॥ गेवा गहसुर द्य ॥ सख जनमान्य ॥ २८

श्रीमन्नामदर्शनं ॥ ३० ॥

श्रीशिवस्य नमः सर्वत्र विद्यमानं ॥ कार्यसिद्धिमादाय जायते ॥
रत्नचक्रात् विद्यमानं ॥ ३० ॥ प्रवासात् प्रदत्तं देयिजे क ॥ प्रवासात् प्रदत्तं
सहितं धर्मकृतं सत्यं आत्मा ॥ ३० ॥ जातिवातात् प्रदत्तं देयिजे क ॥
आपूदात् साधु ॥ ॐ हृदयनाको दाषट् ॥ शिवस्य को प्रजागता ॥ तव
निकादाया ॥ साक्षात् को दाषट् ॥ निरोगं विमाद ॥ तव निकादाया ३०

~~जातिवातात् प्रदत्तं देयिजे क ॥ तवात्तु संप्रदत्तं वासवको वरुणको जा~~
मादाय जायते ॥ ३० ॥ प्रवासात् प्रदत्तं देयिजे क ॥ प्रवासात् प्रदत्तं
सहितं धर्मकृतं सत्यं आत्मा ॥ ३० ॥ जातिवातात् प्रदत्तं देयिजे क ॥
आपूदात् साधु ॥ ॐ हृदयनाको दाषट् ॥ शिवस्य को प्रजागता ॥ तव
निकादाया ॥ साक्षात् को दाषट् ॥ निरोगं विमाद ॥ तव निकादाया ३० ॥

स्त्रीसूर्यानामदसर्ज ॥ ३९

॥ श्रीसूर्यानामदसर्जनेष्ट्वा ॥ कार्यनिचय ॥ मजनं सकं गापयिषि
हजनयैव ॥ ३९ ॥ यवातिवालायुद्धमहयिऊक ॥ यवातिवालासार
हिमयुद्धमकस्येनद्धयनशुडला ॥ ३९ ॥
रजोगिवागायुद्धमहयिऊक ॥ आपदाहलाद्ध ॥ इष्टदयताकोदाषद्ध ॥ हिम
सनकोदाषद्ध ॥ नवनिकाहाजाः राकोकोदाषद्ध ॥ नवनिकाहाजा ॥ ३९

रउगदावागायुद्धमहयिऊक ॥ नवासुसंगः यकवाजवदोनकज्जुवहाला ॥
माहायनहाजा ॥ यकमलासुज्जुनूषकोलारितारहाला ॥ वदाविगमहाद्ध ॥
सुगुवाहयास ॥ नवासुसुगनामाकनलाहाजा ॥ संविजनमा ॥ ३९
यहवागायुद्धमहयिऊक ॥ नलाचिनायोगहसुहद्धुन ॥ इष्टसनायहाला ॥
नयनशुकेष्टुडलाह ॥ नजगमतरद्धुन ॥ द्युदिहा निसचयगतिमान्य ॥ ३९

ॐ श्रीदेविनामदसत्तनं ॥ ३२

ॐ श्रीदेविनामदसत्तनं ॥ सत्तनं सिद्धिजायकं श्वसु विनसति ॥ ३२

यवातिवागापूछुगदपिअक ॥ यवातिअनारासहिगगविलक्षितसिद्धि

यस्मिन्नाद्यनारास ॥ निचयगतिमान्य ॥ ३२

मोगिवागापूछुगदपिअक ॥ आयदाहसोद्ध ॥ देविकापूछुगदपिअक ॥

जागडाआरुसहजनिक्काहाया ॥ ३२

उगवागापूछुगदपिअक ॥ मोगिवागापूछुगदपिअक ॥ वकाकनरुद्ध

यकवाचवकापूछुगदपिअक ॥ पद्धितनासुगगजा ॥ ३२ ॥

उगवागापूछुगदपिअक ॥ मोगिवागापूछुगदपिअक ॥ सवसमापद्धि

वनलक्षितहाया ॥ ३२ ॥

२ श्रीसगिचर गाम दस हां ॥ ३३

रसमिचनदसनेहवा ॥ आपदसचरादेव छिषनसर्वर सविनसति ॥ ३३

यथासिवातापूछु गह यिऊक ॥ पुवा सि कूसलछ ॥ यन जगडना ॥ ३३

स्वागिवापूछु गह यिऊक ॥ आपदरसोछ ॥ देवि साईराका की दाषछ ॥

गरुकापमिपूजा ग हा गवनि का सा ना ॥ ३३

उग वारुकापूछु गह यिऊक ॥ गवा सउचाई मिठो वचन ॥ गव सउहा नहा ल ॥ ३३

२ गरुवाकापूछु गह यिऊक ॥ गवा चिराय गरु सरुछ ॥ यन पूछलार सो ल ॥

आप गरुगति का पूजा ग हा ॥ ३३ ॥

१ श्री कामधनु नाम दत्त सनं ॥ ३४
कामधनु नाम दत्त सनं देवा ॥ नहं निपाय पूजा कृत ॥ ३४
पूजा सिवा रूप दत्त नहं पि अंक ॥ पूजा सि विचय कार्य धन रा रा विष्णु ॥ ३४
शक्तिवा रूप दत्त नहं पि अंक ॥ आपदा र रा दत्त ॥ दोष क हि दत्त ॥ दान पूजा गदा
नव नि को हा न ॥ ३४

२ डग दा व रूप दत्त नहं पि अंक ॥ गजा त्तु कन दधन म प्र रा ग सा ग सा ॥ सा रा ॥
य नि वा न न व स कन ॥ सु रै र या ॥ ३४
शरु वा रूप दत्त नहं पि अंक ॥ गजा वि गा था ग ह र स्य ॥ धन र प्रि प्रा गि ही न
१ गजा धन को आ स या स व दा व अ दत्त ॥ ना हि मा हा दे व ना को वा स दत्त ॥ ३४

२३॥ कं का सिनाम दत्तने दत्तो ॥ ३५
२४॥ मधुसूतं सर्वकार्यं विनश्यति ॥ दक्षिणायामं जैनधर्मनाम सविष्णुति ॥ ३६
२५॥ वासिवागपूद्य गदायि ऊक ॥ पवासिना पूजा ईकष्ट धर्मकोना सद्यः ॥
२६॥ गिवागपूद्य गदायि ऊक ॥ आपूर्वात्मन मननक विमयद ॥ पूर्वदिशा को
दाकिनिका दोषद ॥ नातिनिधि उ विविनिगिनि उ वाता मा जाई पूजा गत्या
तवनिका होना ॥ ३७

२७॥ वागपूद्य गदायि ऊक ॥ मचन्द्राय पापि दत्त ॥ आ प्राना स ह्वा का
मनि साई नाई द ॥ विना नाभन डि य का सोरु गन सगि नरु द ॥ मजो जा स साया
मरु का कामग बावचन मे वा सत्य गवि ना रा ॥ ईष्ट मष्ट साई कन न का म का ॥ ३८
२८॥ ॥ गदा वागपूद्य गदायि ऊक ॥ मना विनाया गह स्या द ॥
महिवदाभुग को दोष वा सद्यः ॥ मधुन द्वादि स्या स ॥ ३९

रेशी नाम नाम रह नं ३६

रेशी नाम च द स न ह त्वा ॥ गह गि पा प प्र बा द ग ॥ ह र्ष प नि त ॥ ३६

पू वा सि वा गा प र्द ग ह पि अं क ॥ पू वा सि जान वि नि क च न क पा ई क न तारा ग

वि प च जा व सा चा उ आ व ता ॥ ३६

रेशी हि वा गा प र्द ग ह पि अं क ॥ आ पू दा र सो द ॥ ग न्ना कृत व व गा को दा ष द ॥

पू जा ग न्या ॥ य व दे व गा को य नि रा व ग न्या ग य नि को दा सो ॥ ३६ ॥

पू वा गा प र्द ग ह पि अं क ॥ ग न्ना स उ व दा द ॥ ग न्ना व क्त यो वि ल ग्ग द ॥ य क वा

च व दा क स स क ल ह हा वा ॥ य दि ग न्ना स उ न्ना स हा वा ॥ व न पू णि ला भ हा हा ॥

॥ ग ह वा गा प र्द ग ह पि अं क ॥ ग न्ना यि गा यो ग ह नि म ल द ॥

स उ र्ग गा प दा वा ॥ व न स मि पा मि ह वा ॥ ३६ ॥

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं ॥ ३२ ॥

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं च व ॥ सर्वत्र विनसति ॥ ३३

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं च व ॥ सर्वत्र विनसति ॥ ३४

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं च व ॥ सर्वत्र विनसति ॥ ३५

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं च व ॥ सर्वत्र विनसति ॥ ३६

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं च व ॥ सर्वत्र विनसति ॥ ३७

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं च व ॥ सर्वत्र विनसति ॥ ३८

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं च व ॥ सर्वत्र विनसति ॥ ३९

ॐ श्रीरक्ति नाम वसनं च व ॥ सर्वत्र विनसति ॥ ४०

२॥ शिवानामदसर्ज ॥ ३८ ॥

२॥ शिवानामदसर्ज येव ॥ सर्वपापविनाशिनमाहात्म्य ३८

यसमासाहात्म्यम् ॥ शिविसर्वपापकाम ॥ ३८

यवाशिवागायत्रुनहृषिऊक ॥ यवाशिवात्रुनहृषिऊक ॥ ससधमगा
नंदद ॥ ३८

वाशिवागायत्रुनहृषिऊक ॥ अयुद्धाहाहा ॥ वधवादाति कोदावा ॥ दव

ताकोदाव ॥ नकायुजागदगवराहाहा ॥ शिवयगलिमाद ॥ ३८

२॥ शिवागायत्रुनहृषिऊक ॥ अयिबदाकलसकोडागदा ॥ गसु

वदाडकको ॥ नविऊरया ॥ अयिऊनसोहाहा ॥ अयिसाहाहा ॥ ३८

२॥ शिवागायत्रुनहृषिऊक ॥ नवाधिगायागहकोदाव ॥ उमावदाचंदास ॥

तावामचंदासगा ॥ अतसंयागआफेआवरा ॥ सत्यगरिमास्य ॥

दारे साद्य ॥ कषियनिद्याम हो जा ॥ आरुसहजनि को हो जा ॥ ३९ ॥

उगवाना पद्मदं पिय अक ॥ न जा चि माया उगदा सा चा द ॥ ये क वा स व दो
पदा दो ना ॥ उगदा ह या द ॥ पचि मे या स उगदा सा ग ना ॥ न जा प च भानं द हा ना
न जा प च व रि दा ना ॥ व न र सि ला रा हा ना ॥ ॥ ग ह वा ना प द्म दं पिय अक ॥ न
न गि ह र ह द ॥ आ के द उ ल स ज न च दा स ॥ र हा रा ग ति मा ड ॥ न व र स हा हा
र न्य ग ति मा न्य ॥ ३२ ॥

१५ वासईदनामदत्तनं ॥ ४०

१६ वाजईदनामदत्तनं ॥ ४१ ॥ अमकायिदवयाजातथवच ॥ अरोम्यच
सयसिद्धिजायगं ॥ ४० ॥ यनासिवागापूचुदसविजक ॥ यवासिषमकसलच
वहतमिनामपमआडना ॥ ४० ॥ वासिवागापूचुदसविजक ॥

१७ वासईदनामदत्तनं ॥ ४२

पाराशराक्षी प्रसादस्य निवेदिन प्रथ

तम ॥

भाकचो ही गती मे भार प्रजाप

सिंह जी के डका व म र

मि ले गी

सवन १९२२ म १९८८ २

मव ग्रह शुभाशुभ फल
(पुनर्जाप हिता)

सवन १९२२ म १९८८ २







[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

रत्नागमसायनमः॥ अत्रयनादसत्तं॥ नक्तियायपुत्रादुक्तम्॥ अमितं सर्वकामफलम्॥
यासक्तयासयम्॥ १ ॥

एवमिति वागपुत्रं हृदि अंकम्॥ एवमिति संवत्सरं च॥ मन्त्रं वा नित्यं यगविमादाम्॥ १
सागिति वागपुत्रं हृदि अंकम्॥ ~~आपूवा~~ आपूवा हृदि च॥ वायुनाम्ना कोटम्॥ वायुनाम्ना फलं
सिद्धिदाम्॥ नवनिर्वाहं सान्निध्यं विष्णुनाम्नाम्॥ १

उगदा वागपुत्रं हृदि अंकम्॥ तं वा वायुनाम्ना कुरु रक्षां॥ नित्यं यनं शुभम्॥ १
विद्या वागपुत्रं हृदि अंकम्॥ तं वा विद्यायाम् कुरु॥ शुभं सौभाग्यं शुभम्॥ आपूवा अत्र पूर्णं
कोपूवा दक्षिणः सक्ति वा दक्षिणः जगा उवाच॥ इष्टं विष्टं दयः वा जा उवाच दक्षिणः दक्षिणः
दाय उवाच॥ जसत्तु रुतं शुभं शुभं दायं दायम्॥ १ ॥

२ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गणेशाय नमः सर्वकार्यसुखदरसहस्रकः तं तापहृन्मृतन ॥ कार्यसिद्धये ॥ २
प्रवाहिकतापूच्यत हं पिङ्गकः प्रवाहिवशीकश्चिपादा हृदयविपिप्रिकादपाहपाहा
गलेयतमृडाया ॥ त्रिचयभनं डाय ॥ २
नागपूनामरु वास्यय ॥ नापूदानिको हं न कालसुखममृपूय ह ॥ वदाकर हृदय
कालचक्रकोपूजागया ॥ तव निका हा जो ॥ नाचयनं हय ॥ २

हृगवातापूच्यत हं पिङ्गक ॥ विज्ञानाधन उपयि नाधन उपयि ना ह ॥ अविहसो रणापना
पट्टिनर्कजात हा ना ॥ सर्वज्ञ ना ह ॥ या ह ॥ वदत ना हा ना ॥ वचनमा हृदयः गिका वाः
नापूच्यत हा पिङ्गकः तं ना विना पा गिरु हृदय ॥ घनिकल ह हा नाः तपि गिरु दिहाः
हा ॥ वत वरु सो हा ना ॥ २ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ २

श्री गणेशाय नमः ॥ सर्वकार्यसुखदरसहस्रकः तं तापहृन्मृतन ॥ कार्यसिद्धये ॥ २

नचजायतः ॥ १ ॥ प्रवाहिवाताप्रचुतपिऊकप्रवाहिगयाको मउदाघनभाडावा
निययनंरय ॥ २ ॥ जातिवाताप्रचुतहपिऊकः आपूदातिदाघद ॥ ग्रहगताको
रुतरुदः ग्रहगतिदानपूय ॥ तयनिकोलाजा ॥ ३ ॥ २२ गवाताप्रचुतहपिऊ
कः शरुनाघनघनको वातदः कहिहोमारया ॥ यकलसुउदः तसांरुकाको
कः निमान्यासः आरुबुद्धिदः तवरसीहीवाः ॥ २ ॥ गिफावाताप्रचुतहपिऊ

कः तंवाचितायग्रिहपूजासाठाउमाहजय ॥ धिरमाइहावा ॥ ३
आदवदनसने ॥ ४ ॥ ॥ ५ वदनसनेसुवसंयति ॥ दवसारथेवजायतीत्यरासा
कार्यसिहिः ४ ॥ प्रवाहिवाताप्रचुतहपिऊकः तंसाचितयोकासनुनंवाहाजा
प्रदसगयाको वादाघनभाडा ॥ ५ ॥ जातिवाताप्रचुतहपिऊकः आपूदातिदा
कः ॥ ग्रहगतिपूजागत्यादः ग्रहकादाघदः घनकोइरिदवताको वापदः तयनि
कोलाजा ॥ ६ ॥ २२ गवाताप्रचुतहपिऊकः शरुनाघनको वातादः कहिडाग

स्याः यकसुसु उच ॥ तच्छास्यामा निरुको जा निमा निरुन्यास ॥ मूरु विना रुयाः तव त
 जा निगहाजा वयनमसास्यग विना न्य ॥ ४ ॥ गिम्मा माता पूरुत पिऊक पूनाना ठाउति
 हयः स्यनसा हसु ॥ दिष्टदवता पूजागम्या ॥ ४ ॥ ॥ २ममगनना वसतं ॥ ५
 श्रीगमसकार्य सि हि ॥ वनरा यन ॥ स्यगार्गसर्वकार्य सि हि ॥ ५ ॥ ॥ प्रवाहिवा ता पूरुत
 पिऊकः पदसगयाकासा भगति सा दो दास न्या वसाह तसजतिमा स्य स ॥ तगोगविमा
 न्य ॥ ॥ योगयाता पूरुत ह पिऊकः अपूर्वा कसुत ॥ मूरु यवको दोष ॥ ईष्ट

दवता सा ग्याको दोष ॥ यरुका पतिरावगन्या ॥ राग्यापति ॥ तव निवा हासा ॥ ५
 वृगवाता पिऊकः तयोतु हसु ॥ नमोपहर्तुकोनः रागिजा नाः सहुयोगन्याः ततिनि यन म
 उत्तामसगसि स्यता ह ॥ ॥ गिहयाता पूरुत पिऊकः तयोविनाया गिहयतु ने
 सस्यस तोकसक हहाया ॥ वनरा क्रि भुहि दा ॥ सविजनता न्या ॥ वयनमसा
 तहदीना स्य गतिमा न्या हा स ॥ ५ ॥ ॥

स्त्रीभक्तिनामदशमं ५ ।

शुभ्रिचउदयसस्यविद्यावनस्यरुहागतिदयनिसर्चकार्यनिसिर्गमनसाधिति
न ॥ ७ ॥ प्रवाहिवातापूचनहपिऊक ॥ प्रवाहिकार्यसिद्धिगनिघनआउ
रा ॥ ७ ॥ नोजिवातापूचनहपिऊक ॥ आपदागसहाद ॥ नयाघनमाआगसउठि
मयाकावापूच ॥ नलोकाषद ॥ पूजागम्यागवीरकोहारा ॥ वचनमेवागसिपुत्र
सा ॥ ७ ॥ नगवाताहपिऊक ॥ यकवाकाकनहहारा ॥ सकमुल्लहारा ॥ पवि

नरा ॥ दिननहारा ॥ वननक्रिनावसागा ॥ रुतनऊविमान्य ॥ ७

शिववातापूचनहपिऊक ॥ नलोवितायागहभ्रिकोकरहकोहारा ॥ नापिव
स्यावन ॥ घनिहारा ॥ नोविशिहारादिहान्यास ॥ नवरसाहारा ॥

निश्चयमनमान्यदयउंयु ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

श्री गणेश स्तन ॥ ७ ॥

श्री गणेश स्तन यन ॥ कार्य नास्त्यरवि शक्ति ॥ वन नास्तन ॥ १
प्रवासा वातापि चतुहा प्रिऊक ॥ या वासि वरुन्य इव पाया ॥ रागि शक्ति वरि यमन
तरुतुः मना को दिन पदि यव आउता ॥ १ ॥
गगना ता हा पूरुत ह पिऊक ॥ आपूना मपू हो ॥ यव द पिउत न दसा ॥ सगमा हा स
गदि वेडरा इधिया ॥ राग दा कि निदा पद ॥ कोला कुवना र उवा ठो मा पूजा गम्या ॥

नव त्रिकोला ॥ १ ॥

उगवा ता पूरुत ह पिऊक ॥ किता ना पल या उ यव वि ता ई ई ॥ जिये वनि
हा ना ॥ त्या क न ग ता स ॥ यवन मे सा हा ना ॥
यिह ॥ ॥ या न पूरुत ह पिऊक ॥ गता वर मा ला सर्व को वा स ॥ गती
पर त र चहुंतेः दा दि ला सा ॥ यवन मे सा स्य ग रि मा न्य ॥ १ ॥

२४ ईश्वरनामदसर्गः ॥ ८ ॥ ८

आईश्वरदसर्गः ॥ माहायानकेपाकनामः ॥ त्रिसिद्धिर्षदसिद्धिः ॥ साकल्यं
यत् ॥ ८ ॥ ॥ प्रभातिवातापूरुदतहपिऊकः प्रभातिविदससगयाका सासगति
सहिगतिवक्रुत्वे दिनप्रदिघ्नप्रभावसायवनेमसासत्यगति ॥ ८
सुगिवासापूरुदतहपिऊकः सापूरुदतह ॥ ग्रहगतिकावापूरुद ॥ माहायानपूजागत्या ॥
ग्रहपतिरावगत्या ॥ प्रभातिजनदिया ॥ आरुनाश्वदवताकासावना ॥ सगयसोसा
सावा ॥ ८

नृगवातापूरुदतहपिऊकः वक्रुत्वे दिनकोवागत्या ॥ सगयसोसा ॥ आरुना
नृत्या ॥ त्रिसिद्धिर्षदसिद्धिः ॥ साकल्यं ॥ माहायानपूजागत्या ॥ ८
ग्रहवातापूरुदतहपिऊकः तसोविहस ॥ आरुनायनसुस ॥
नयनिकासा ॥ ८ ॥ ८

२ पावति नात दत्तनं ॥ २

आवावति दत्तनं ॥ न हनिता पय वा जलं ॥ प्रसन्न रक्त र्हि हि इष स कुरु विष्यति ॥ २
प्रवाति वाता पूरुत हं वि ऊ क ॥ प्रवाति कुसुत ग ति आवति निवय गी व मा ॥ २
आ गि वा ता पूरुत हं वि ऊ क ॥ आ ज्ञा रथा द ॥ व वि ता ई र गि द ॥ स्य रा ग्या का व हा ठु हा
इ हा ना ॥ आ का स नि का हा ना म ॥ २
नृ ग वा ता पूरुत हं वि ऊ क ॥ न वा वि ता या प्र का म हा ॥ २ ॥ स्य र ज न मा त्या त स सा र्या

नृ ग म द

द ॥ आ र्हा म वा व न स कि लो र म हा ना ॥ ना ज्ञा प्र जा द हा ना ॥ २
र गि ह वा ता पूरुत हं वा गि ह आ का ना रा ग हा ना ॥ न वा घ न मा का व का हि द ई न ॥
आ रु क्त द व ता पू जा ग न्या द ॥ रु न्या का प जा ग पी न र मा ज न व र सा हा ना ॥ स व स
ना क हा ना स न वि ज न मा न्य ॥ व व न म वा ग वि ता न्या हा ना ॥ २

श्री वासुदेव नाम दत्त ॥ १०

श्री वासुदेव नाम दत्त ॥ कार्त्तिक मास विष्णु ति ॥ त्रिरुत्तमि तिनं कार्य माहा धार रु
तं ॥ १० ॥ पुनर्वाति वातापूतं तं ह विजय ॥ पुनर्वाति मत्त ग्रह यद् ॥ कथयथा च ॥
वदा कथयति न वह ॥ दिन मा पुन आठि वा ति यथा ग विमा न्या वचन मे वा सुगति ॥
रोग वातापूतं तं ह विजय ॥ आपूत च वाष दिन च ॥ पत्त ॥ वाष च ॥ आपूत पाप यश्च
ग्रह पत्ति माया का च ॥ दक्षिण दिशा का रत का वाष च ॥ को सा कप वास पूजा गमा र ॥
तव का त्रिको र ॥ १०

वगवातापूतं तं ह विजय ॥ विमाना जिथा वत्त जियो ॥ उपपाप चित नाई दम् ॥ अरु उग नू वि
वगनः कथय हा वा ॥ सा र क हि अ धिन वचन मे वा म सा न डि मा न्य थ य ॥ १०
शिला वातापूतं तं ह विजय ॥ तं वा विमा य ग्रि ह स र ॥ अ थी न ॥ अ स च व को म स का
स थ क वि ज च ॥ ना हा मा हि स र च ॥ तं वा पत्त च दि सा यो र ॥ व ग व ति को र ॥
वचन मे वा स र ग वि मा न्या म् ॥ १०

अस्य नाम दत्तं ॥ ११

अस्य दत्तं कृत्वा ॥ कार्यं सिद्धिं विष्णुः इत्यादि जज्ञाति धनं सा होर विष्णुः ॥ ११
प्रवाहि वातापूरुहं विष्णुः ॥ प्रवाहि ज्ञानं दुःसादा ॥ साहसं हितागतिं प्रजापतिः
नयति यत्र आत्मा ॥ रसुधं जनिमात्यम ॥ ११ ॥ ज्ञानं वातापूरुहं ज
कः आरु वातापूरुहः वायुं कति आषितं यद्गतिं को रसुधं इदं वायुं विष्णुः यद्गतिं
दानं यायमाः तव नि का होता ॥ च वत्तं मया ॥ ११

वग वातापूरु जगत् शकः यक वादां कसह सति ॥ पृथु गतिं जिति होता ॥ नसरु वा
रुपात्तः तस्मात् उक्ता इति ॥ यन्निरुक्तं होता ॥ वत्तं वातापूरु जगत् शकः ॥ ११
२ गतिं वातापूरु जगत् शकः ॥ गतिं वातापूरु जगत् शकः ॥ उक्ता जगत् शकः ॥ वत्तं नि विष्णु
उक्ता जगत् शकः ॥ वत्तं नि विष्णु ॥ ११ ॥

२॥ यथिनामदसनं ॥ १२

॥ यथिनामदसनं ॥ इत्येवमादिनामनयसकव्यसाराहनापि ॥ नत्रजास्यसतपा
नकमः ॥ १२ ॥ प्रवाशिवानाप्रदुतहंयजकयुवाभिसुषः साकडकलासहितागि
मनाकोहिजयदिघनजाडसासुगजिसान्यसना ॥ १२
२॥ जिवागाहप्रदुतहंयजकः साजिवनमाजातुं अथानसदसुद्धउतायकः
दिकयासावयगाकादायकः पयिमयगाडनसपहंसापूर्यकासादधिससगाथा

गन्यासतसेवर्नका अजगागन्यास ॥ विनकाभेव्यदगन्यास ॥ वाहुजनमानिसः पूजार्गिन
जान्यादाद्यातापनः पूजागन्या ॥ १२ ॥ ॥ नृगदावागाप्रदुतहंयजकः गपा
दिनकाचगताविनाईदुह ॥ वक्रादिनपदिभनवाहसावाः वचनसुथगहिसान्यन
२॥ हिवागाप्रदुतहंयजकः तजाचितायाकाग्रिहसरुद्धः गुरुथिरेक ॥ वनसुनति
साहसा ॥ हसननिसान्यसुगवहयानास ॥ १२ ॥

रक्षाहस्तनादस्तनं १३

रक्षाहस्तनामदनम्यश्चः कार्यं ननु किं कल्याणं च वसनसाविति नं कार्यं सति
व्यतिः १३ ॥ उवाचिवातापूरुतह पिऊकं प्रवाहिकस दृता रसहित गति थी

त्रेदिनमायन आबवायि च गविमान्य १३ ॥ अगिवातापूरुतह पिऊकं भा

~~उदारवाचते बाधनकाके उमा वकाविदः गहिरुत्रिरुत्या का दवका को धन दः~~

गहका बाध दः ॥ पूजागत्या स नयन आहवा सय गविमान्यः १३

उगवातापूरुतह पिऊकं गहका बाध दः गहका बाध दः गहका बाध दः गहका बाध दः

कि सप्त पूसादको ला जस रुति को ज सय माया १३ ॥

अगिवातापूरुतह पिऊकं गहका बाध दः गहका बाध दः गहका बाध दः गहका बाध दः

कहः गहिरुत्रिय क दवका को वास दः गहका पूजागत्या स नयन आहवा सय गविमान्यः १३

राजी कृत नाम दत्तनं ॥ १७

राजी कृत दत्तनं येन दत्तनियापपना कृत सिद्धिनि कार्यानि धन साक्षात् विधि वि ति ॥ १७
प्रवाहिया सिवागा पूरुत हापि कृत ॥ प्रवाहि कृत सद्धनः धन सन्नि सति गति धन आउ
ताः सगन सनि मा न्या ॥ १७ ॥ सो गियागा हे पि ऊ क ॥ अपूवा कृत सद्धः काय केहि
आथिन आरुय रुग नि कृत सद्धः पूजा गन्या सद्ध गति दा न गन्या नव वि को हावा
र गवाता पूरुत हे पि ऊ कः गेना सन मा धन दः न वा सद्ध कृत मा पाप दः तस्य गति

गमिष्या कृत सद्धः कृत को विदु सगया को धान सग विः न वा सद्ध को ना सद्धाः गस्य
गया ॥ गेना सद्ध को धन सन्नि सति कृत सद्धाः सनूध ऊ नि मा न्या सद्ध वि धये ॥ १७
विदु याना पूरुत हे पि ऊ कः गेना विदु सग धन सन्नि सति गति सा सद्ध सद्ध ऊ नि मा न्या
सद्ध ॥ १७ ॥

राजी अयन दत्तनं ॥ १७

रुआचइनामदसनं १६ ॥

रुआचइदसचैरुआकार्यसिद्धिमाहासुषपूष्यपिथिविजअपालस्यसाकेरुतपू
सुवासिवागापूचनदोपिऊकःपुवासिसुषमाध्रदगसिधलआवलानजिकैआ
उवा ॥ १६ ॥ रुआगिवागापूचनदोपिऊकःआपदाकसलआनंदोचःमिच
जातिकोदाषचःमहोअसयावगगतनवनिकोदोरा ॥ १६
उगवागापूचनदोपिऊकःकमानिससंगवेहोवागसिद्धिःयकवालकसदोरा

निदागदसःयचननजासिद्धिदोवाःमसासुहागलाःमसाईधनरुमिसारदोरा ॥
सागायजादसदोवाःसुवेजसाच ॥
रुआचइवागापूचनदोपिऊकःमसाचिनायिरुसमनचःरुमनजनम्यास ॥ रुआ
सलावकुमिसलाकेरुआईमिसलाःयचिधनतक्रिबनलाःआरुहागकोरु
सेच ॥ १६ ॥

शायमनामदसनं ॥ १७

शायमनामदसनं कृत्वा ॥ कार्यं नात्यरु विध्यति मन्त्रं सत्यं सताय जय वादत्रुष्य
दवदेव निश्चयः १७

पवाति वागाय च न ह्यपि जय ॥ पवाति वदामं गाथ माहा ॥ चल पूग तादि पदं
हसि रुति माहा ॥ १७ ॥ शो गि वागाय च न ह्ये ऊ कः शो गि
यम तात माहा यद ॥ अ पवदा क थिन ॥ का लो च क को पूग गमा ॥ का लो वाष

तात वरिया ॥ ० ग व नि का हा ना ॥ १७

उग वागाय च न ह्यपि ऊ कः गे ला स तु का जय च न ला मं दा ॥ व न य गिला ॥
न ०० हा ना ॥ अ न का म ई ह म न का म हा ला
ए का वागाय च न ह्यपि ऊ कः ॥ गे ला यि ना या ए ह मा तु म तु हा ला ॥ अ न व न का ना स हा
य र ह व थ च वि हा ला ॥ ग व रु ला हा ला ॥ १७